International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(3): 132-134

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(3): 132-134
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-03-2020
Accepted: 13-04-2020

कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, भादरा,
जिला हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, भादरा,
जिला हनुमानगढ़, राजस्थान, भारत

कालिदास के रूपकों में प्रकृति चित्रण

कृष्ण कुमार शर्मा

सारांश
सरस्वती के वरद्पुत्र कविकुल शिरोमणि, महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य जगत् के देदीप्यमान नक्षत्र के रूप में प्रकाशित हैं। वे न केवल उच्च कोटि के साहित्यकार हैं अपितु एक अद्वितीय नाटककार भी हैं। उनके द्वारा विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम् एवं मालविकाग्निमित्रम् रूपक उनकी नाट्य कला में श्रेष्ठता के प्रमाण हैं। कालिदास काव्य के किसी भी कौशल में न्यून नहीं है जैसे छन्द, अलंकार, गुण, रीति, रस विषयवस्तु आदि। किन्तु कालिदास ने प्रकृति चित्रण से जो मनोरम रचना की है, वह अनुपम है। उनके रूपकों में प्रकृति चित्रण में इतनी सजीवता, रमणीयता, भव्यता एवं स्वभाविकता है जो पाठकों एवं दर्शकों को सहज ही आकृष्ट कर लेती है। उनके नाटकों में ऐसा कोई अंक नहीं है जिसमें प्रकृति चित्रण न किया हो। वे प्रकृति के पटु पुजारी है। उनके तीनों नाटकों के अनुशीलन से यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है। कालिदास ने प्रकृति का मानवीकरण कर दिया है। अभिज्ञानशाकुन्तलम् में आद्योपान्त कोमल एवं सरस प्रकृति का सजीव चित्रण है। उनकी नायिका शकुन्तला वस्तुतः प्रकृति कन्या ही है। विक्रमोर्वशीयम् की नायिका उर्वशी को जब शाप मिलता है तो वह लता बनती है। मालविकाग्निमित्रम् में प्रमदवन आदि का रमणीय वर्णन है।

कूटशब्द : प्रकृति, साहित्य जगत्, नाटककार, रूपक, रस, छन्द, अलंकार, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्, मालविकाग्निमित्रम्, नायिका, मानवीकरण।

प्रस्तावना

प्रकृति चित्रण

महाकवि कालिदास न केवल अन्तर्जगत् के वर्णन में निपुण हैं अपितु बाह्य जगत् के चित्रण में भी प्रवीण हैं। बाह्य जगत् के वर्णन में प्रकृति चित्रण की छटा अनुपम है। बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण तथा उसका मार्मिक चित्रण कालिदास की प्रमुख विशेषता है। पं. बलदेव उपाध्याय ने कालिदास के प्रकृति प्रेम एवं साधना का मार्मिक वर्णन करते हुए लिखा है – "कालिदास प्रकृति देवी के प्रवीण पुरोहित थे। उनकी सूक्ष्म दृष्टि से प्रकृति के सूक्ष्म रहस्यों को सावधानता से हृदयंगम किया था। उनके प्राकृतिक वर्णन इतने सजीव हैं कि वर्णित वस्तु हमारे नेत्रों के सामने नाच उठती है।"

कालिदास के न केवल महाकाव्य अपितु उनकी सम्पूर्ण नाट्यकृतियां भी उनके प्रकृति प्रेम की साक्षात् परिचायक हैं। अभिज्ञानशाकुन्तलम् तो प्रत्यक्ष रूप में ही प्रकृति चित्रण का श्रेष्ठ ग्रन्थ है।

महाकवि कालिदास को प्रकृति से इतना प्रेम था कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् के मंगलाचरण में शब्दतः प्रकृति का उल्लेख किया है –

"यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः"[1]

महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण स्वाभाविक है, अतः उन्होंने स्वाभाविक अलंकार का सहजता से प्रयोग किया है जो आश्रम के पार्श्ववर्ती क्षेत्र के वर्णन में स्पष्टतः द्रष्टव्य है –

"नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरुणामधः
प्रस्निग्धा क्वचिदिंगुदीफलभिदः सूच्यत एवोपला।"[2]

जब राजा दुष्यन्त तपोवन में प्रवेश करते हैं तब वहाँ पर शकुन्तला, प्रियंवदा एवं अनसूया को देखते हैं तो उनको ये तापस कन्याएं राजा को महलों की महारानियों से भी सौन्दर्य में अधिक सुन्दर लगती हैं। इस प्रसंग में भी कालिदास ने राजा के मुख से इन कन्याओं को वनलता बताकर आर्या छन्द में अपने प्रकृति प्रेम को प्रकट किया है –

"शुद्धान्तदुर्लभस्य वपुराश्रमवासिनो यदिजनस्य।
दुरीकृता खलु गुर्णैरुद्यानलता वनलताभिः।।"[3]

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका शकुन्तला का लालन पालन एवं शृंगार प्रसाधन प्रकृति के द्वारा ही किया गया है। उसका विवाह पर्यन्त जीवन प्रकृति की गोद में ही व्यतीत हुआ है और जीवन का उत्तरार्द्ध भी प्रकृति में ही व्यतीत होगा ऐसा संकेत स्वयं महर्षि कण्व ने दिया है –

"शान्ते करिष्यामि पदं पुनराश्रमेऽस्मिन्।"[4]

शकुन्तला जब पतिगृह के लिए विदा हाती है तो उससे पूर्व शकुन्तला का प्रकृति के प्रति अगाध प्रेम प्रकट किया गया है। वह स्वयं पानी पीने से पहले पौधों को पानी देती थी, जब प्रथम बार पौधे पुष्पित होते थे तब उसके लिए उत्सव होता था। उसको पौधों से शृंगार करने का शोक था फिर भी वह उनके फूलों को नहीं तोड़ती थी। यहाँ कालिदास ने प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कण्व ऋषि के मुख से वृक्षों को यह सम्बोधित करवाया है कि आप सभी आप से स्नेह करने वाली शकुन्तला को पतिगृह जाने की आज्ञा दीजिए –

"आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः।
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्।।"[5]

उपर्युक्त पद्य कालिदास के प्रकृति प्रेम का एक अनुपम उदाहरण है।
कालिदास ने मानव एवं प्रकृति के घनिष्ठ रागात्मक सम्बन्धों की अभिव्यक्ति की है। शकुन्तला की विदाई के समय कण्व प्रकृति से शकुन्तला को विदा करने को कहते हैं तब कोयल कूकती है तो वे कहते हैं कि तपोवन के शकुन्तला के साथी वृक्षों ने कोयल के शब्दों से उसे पतिगृह जाने की आज्ञा दे दी है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अंक वस्तुतः मानव एवं प्रकृति के घनिष्ठ सम्बन्धों का परिचायक है। इस अंक में तपोवन की कन्या शकुन्तला के लिए प्रकृति आभूषण प्रदान कर रही है, मृग का छोटा बच्चा वात्सल्य भाव से वशीभूत होकर शकुन्तला को आगे नहीं जाने दे रहा है[6], प्रकृति पत्तों के गिरने के व्याज से शकुन्तला के लिए अश्रुपात करती है[7]। करुण रस का यह दृश्य कालिदास के प्रकृष्ट प्रकृति प्रेमी का परिचायक है।
कालिदास की दृष्टि में मानवीय सौन्दर्य प्रकृति से ही पूर्णता प्राप्त करता है शकुन्तला प्राकृतिक आभूषणों से कृत्रिम आभूषणों की तुलना में अधिक सुन्दर लगती है।
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्रकृति एक पात्र के रूप में वर्णित की गई है। प्रकृति को सच्चे अर्थ में मानव की सहचरी बना दिया है। वह अन्य सजीव पात्रों की तरह ही व्यवहार करती है। प्रकृति साक्षात् प्रेरणादायक पात्र के रूप में अपना चरित्र प्रकट करती है। यह न केवल मनुष्य के लिए मनमोहक है, अपितु मनुष्य को जीवन की उच्च कोटि की शिक्षा भी प्रदान करती है। पंचम अंक में कहा गया है कि "जिस प्रकार सूर्य, वायु एवं शेषनाग अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हैं उसी प्रकार राजा का सदैव अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग होना चाहिए।"[8]
कालिदास की प्रकृति सहानुभूति का प्रदर्शन मात्र ही नहीं है अपितु दुःखी जनों को सान्त्वना एवं प्रेरणा भी प्रदान करती है। चतुर्थ अंक में चक्रवाकी के प्रसंग में अनसूया के कथन से यह स्पष्ट है –

"एषापि प्रियेण विना गमयति रजनीं विषाददीर्घतराम्।
गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति।।"[9]

वस्तुतः अभिज्ञानशाकुन्तलम् में मनुष्य एवं प्रकृति रसायन के समान संश्लिष्ट हैं।

विक्रमोर्वशीयम् में भी कालिदास का प्रकृति प्रेम स्पष्टतः परिलक्षित है। यह रूपक त्रोटक है जो उपरूपक में परिगणित है। इसमें भी पर्वत, उपवन, लता, मेघ, गिद्ध, चन्द्र, गंगा आदि का वर्णन उनके प्रकृति प्रेम का परिचायक है। उर्वशी को जब शाप मिलता है तो वह लता बन जाती है जो कवि के प्रकृति प्रेम का ही परिणाम है। जबकि प्राचीन आख्यान में ऐसा वर्णन नहीं मिलता है। जिस वैदिक आख्यान को कालिदास ने आधार बनाया है वह वस्तुतः एक प्राकृतिक उपादान की व्याख्या के रूप में था। पुरूरवस् (मेघ) और उर्वशी (विद्युत्) परस्पर संयुक्त है। उनमें संयोग से आयुष (अन्न) उत्पन्न होता है।[10] इनका मानवीकरण किया गया है।
उर्वशी जब राक्षसों के भय से मुक्त होकर पुनः चेतना प्राप्त करती है तो उसकी दशा के वर्णन में प्रकृति का सुन्दर चित्रण किया है –

"मोहेनान्तर्वरतनुरियं लक्ष्यन्ते मुक्तकल्पा
गंगारोधः पतनकलुषा गच्छतीव प्रसादम्।।"[11]

उर्वशी के विरह में राजा विक्षिप्त होकर मेघों को असुर एवं इन्द्रधनुष को असुर आयुध वृष्टि को बाण वर्षा एवं विद्युत् को उर्वशी मान लेते हैं किन्तु शीघ्र ही उनका भ्रम दूर होता है कि ये तो प्रकृति के उपादान है –

"कनकनिकषास्निग्धा विद्युत् प्रिया मम नोर्वशी।।"[12]

मालविकाग्निमित्रम् में भी कालिदास का प्रकृति चित्रण मनोहारी एवं प्रसंगानुकूल है। तृतीय अंक में जब राजा प्रमदवन की सुन्दरता को देखते हैं तो कहते हैं कि वसंत की शोभा ने तो स्त्रियों के प्रसाधन की अवज्ञा कर दी है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति के सौन्दर्य को कृत्रिमता से उच्चतर बताया है।

"सावज्ञेव मुखं प्रसाधनविधौ श्रीमाधवी योषिताम्।।"[13]

राजा अग्निमित्र ने स्वयं को चक्रवाक एवं मालविका को चक्रवाकी एवं धारिणी को दोनों के मिलन में बाधक रजनी से उपमित किया है –

"अननुज्ञातसंपर्का धारिणी रजनीव नौ।"[14]

तृतीय अंक में इरावती से छुपने के प्रसंग में राजा अग्निमित्र के कथन से कालिदास ने कमलिनी के प्रति अपना अनुराग प्रकट करने प्रकृति प्रेम को पुष्ट किया है।

"नहि कमलिनीं लब्ध्वा ग्राह्मपेक्षते मतंगजः"[15]

अर्थात् एक मतवाला हाथी कमलिनी को देखकर मगरमच्छ की ओर नहीं देखता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तीनों रूपकों में प्रकृति के मनोहारी एवं हृदयावर्जक वर्णन से स्पष्ट होता है कि महाकवि कालिदास प्रकृति के सच्चे पुजारी हैं। उनके लिए काव्य की अन्य विषय–वस्तु की तुलना में प्रकृति चित्रण सर्वोपरि है। ऐसा प्रतीत होता है कि काव्य तो एक व्याज है वस्तुतः प्रमुख लक्ष्य तो प्रकृति के प्रति अपने हृदयोद्गार प्रकट करना है। उनके रूपकों में प्रकृति एक पात्र ही नहीं अपितु प्रमुख पात्र है। यदि प्रकृति चित्रण को पृथक् कर दिया जाए तो उनका काव्य अपूर्ण ही लगेगा। उनका सम्पूर्ण प्रकृति चित्रण स्वाभाविक, सहज, प्रासंगिक एवं रमणीय है। काव्य के सभी तत्त्वों जैसे – अलंकार, छन्द, रस, गुण, रीति आदि से अपने प्रकृति चित्रण को आह्लादक रूप प्रदान किया है।

कालिदास की प्रकृति मनुष्य के साथ घनिष्ठ रूप से संश्लिष्ट है। प्रकृति के पात्र वृक्ष, लता, पशु, पक्षी, मेघ आदि सभी सजीव पात्रों की तरह व्यवहार करते हैं। इनकी प्रकृति मानव जीवन की अनुभूतियों से संयुक्त होकर अत्यन्त चित्ताकर्षक बन गई है। अन्त में कहा जा सकता है कि कालिदास की नायक–नायिकाओं एवं अन्य प्रमुख पात्रों का मूल आधार ही प्रकृति है एवं यह उनकी दूरदृष्टि की परिचायक है जो आज के सन्दर्भ में नितान्त महत्त्वपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/1
2. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/13
3. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 1/15
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 4/20
5. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 4/9
6. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 4/14
7. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 4/12
8. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास 5/4
9. अभिज्ञानशाकुन्तलम् – कालिदास, 4/16
10. यजुर्वेद 15/19
11. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 1/9
12. विक्रमोर्वशीयम् – कालिदास 4/7
13. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 3/5
14. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 5/9
15. मालविकाग्निमित्रम् – कालिदास 3/गद्य (पद्य संख्या 9 के पश्चात्)